Bhishma School of Indian Knowledge System

MA Course

संस्कृतभाषा परिचय

Lecture 17 – 06.11.2023

- Harshada Sawarkar

sawarkar.harshada123@gmail.com

For Homework -

तथापि, नरेश, हिमालय, परमार्थ, हितोपदेश, यद्यपि, इत्यपि, मानवेन्द्र, तथेदम्,

प्रत्युपकार, रामेति, यथेच्छसि

खलु + इदम्, सृजामि + अहम्, भवति + उत्सव:, कान्ता + इव, रमा + उवाच,

तथा + एव, चारुदत्तस्य + औदार्यम्, प्रति + एकम्, आत्मा + असि, च + एव,

नयनेन + ईक्षते, सदा + एव

Answers –

तथा + अपि, हिम + आलय, परम + अर्थ, हित + उपदेश, यदि + अपि, इति + अपि, मानव + इन्द्र, तथा + इदम्, प्रति + उपकार, राम + इति, यथा + इच्छसि

खिल्वदम्, सृजाम्यहम्, भवत्युत्सव:, कान्तेव, रमोवाच, तथैव, चारुदत्तस्यौदार्यम्, प्रत्येकम्, आत्मासि, चैव, नयनेनेक्षते, सदैव

आज्ञार्थ

दो अर्थों में से एक अर्थ

विनंती, आज्ञा इस अर्थ से ये प्रत्यय धातुओं में लगते हैं।

किसी को आज्ञा देने के लिए अथवा काम करने के लिए कहने के लिए इस तरह के

क्रियापद प्रयुक्त किए जाते हैं।

आज्ञार्थ – परस्मैपद

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुष: |
|---------|-----------|----------|---------------|
| तु | ताम् | अन्तु | प्रथम: पुरुष: |
| 0 | तम् | त | मध्यम: पुरुष: |
| आनि | आव | आम | उत्तमः पुरुषः |

आज्ञार्थ – परस्मैपदी धातू

| गण | धातू |
|----|--|
| 1 | पठ्, वद्, वप्, धाव्, चल्, क्रीड्, खाद्, खेल्, गच्छ्, गाय्, चर्, जल्प्, यच्छ्, दह्, नम्, पत्, पिब्, नय्, निन्द्, भज्, भ्रम्, रक्ष्, भव्, हस् |
| 4 | अस्, कुप्, क्रुध्, तुष्, नश्, नृत्, पुष्, सिध्, स्निह्, हृष् |
| 6 | लिख्, कृष्, क्षिप्, दिश्, पृच्छ्, मुञ्च्, विन्द्, विश्, स्पृश्, सिञ्च् |
| 10 | कथ्, पूज्, गण्, चिन्त्, चोर्, ताड्, दण्ड्, क्षाल्, भक्ष्, भूष्, रच्, वर्ण्, पीड् |

वो गीत गाए। He should sing a song. किसान बीज बोए। Farmer should sow seeds. तुम घर जाओ। You should go home. त्म दोनों अधिक मत बडबडाओ। You two should not talk much. तुम सब धूप में मत घूमो। You all should not roam in heat. मैं जोर से पढ़ं। I should read loudly. वो स्त्री नृत्य करे। That lady should dance. हम पत्र लिखें। We all should write a letter. तुम कथा कथन करो। You should tell a story. वो अधिक सोचे। He should think more.

सः गीतं गायत्।

कृषीवल: बीजानि वपत्।

त्वं गृहं गच्छ।

युवां अधिकं न जल्पतम्।

यूयम् आतपे न भ्रमत।

अहम् उच्चै: पठानि।

सा ललना नृत्यतु।

वयं पत्रं लिखाम।

त्वं कथां कथय।

सः अधिकं चिन्तयतु।

आज्ञार्थ – आत्मनेपद

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुष: |
|---------|-----------|----------|---------------|
| ताम् | इताम् | अन्ताम् | प्रथम: पुरुष: |
| स्व | इथाम् | ध्वम् | मध्यम: पुरुष: |
| ऐ | आवहै | आमहै | उत्तमः पुरुषः |

आज्ञार्थ – आत्मनेपदी धातू

| गण | धातू |
|----|--|
| 1 | रम्, लभ्, ईक्ष्, कम्प्, क्षम्, डय्, त्राय्, त्वर्, बाध्, यत्, याच्, रभ्, रोच्, लङ्घ्, वर्त्, वर्ध्, शोभ् |
| 4 | जा, पद्, बुध्, मन्, युज्, युध्, विद्, |
| 6 | दिश्, म्रिय्, लज्ज्, विन्द्, सिञ्च् |
| 10 | कथ्, पूज्, गण्, चिन्त्, चोर्, ताड्, दण्ड्, क्षाल्, भक्ष्, भूष्, रच्, वर्ण्, पीड् |

वो धन प्राप्त करे। तुम चित्रपट देखो। तुम सब पाठशाला जाने के लिए जल्दी करो। हम प्रयत्न करें। अर्जुन, तुम युद्ध करो। युधिष्ठिर, तुम ये समझो। मालाकार पेडों का सिंचन करे। सारे शिक्षक छात्रों की गणना करें। वे दोनों लडिकयाँ कविता की रचना करें। राजा दुर्जनों को दण्ड दे।

He should earn money.
You should watch movie.
You all should hurry up for school.
We all should try.
Arjuna, you should fight the war.

Yudhisthira, you should understand this.

Gardener should water the plants.

All teachers should count the students.

Those two girls should construct a poem.

King should punish the wicked.

सः धनं लभताम्। त्वं चित्रपटं ईक्षस्व। यूयं पाठशालागमनाय त्वरध्वम्। वयं यतामहै। अर्जुन, त्वं युध्यस्व। युधिष्ठिर, त्वं एतद् विद्यस्व। मालाकार: वृक्षान् सिञ्चताम्। शिक्षका: छात्रान् गणयन्ताम्। ते बालिके कवितां रचयेताम्। नृप: दुर्जनान् दण्डयताम्।

कुछ आज्ञार्थी वाक्य

| वरं यच्छ। | सन्देशं हर। | अन्नं भक्षय। |
|----------------|--------------------|----------------|
| मां रक्ष। | वार्तां हर। | फलानि भक्षय |
| मम सेवकं रक्ष। | सत्यं वद। | आज्ञां पालय। |
| अत्र आगच्छ। | धर्मं चर। | बालकं पालय |
| तत्र गच्छ। | वेगेन चल। | दु:खं विस्मर। |
| उच्चै: हस। | क्रीडाङ्गणे क्रीड। | प्रश्नं पृच्छ। |
| दूरम् अपसर । | जलं पिब। | उत्तरं यच्छ । |
| उत्तिष्ठ । | दुग्धं पिब। | मार्गं पश्य । |
| उपविश । | माम् अन्यत्र नय। | परमेशं स्मर। |
| माम् अनुसर । | सुवर्णं तोलय। | क्षम्यताम् । |
| | | |

विसर्गसन्धि

1. पदान्त में आनेवाला विसर्ग कब स्थिर रहता है?

वाक्य में अन्तिम पद विसर्गान्त होने से -

उदा. फलं खादति राम: ।

विसर्गयुक्त पद के आगे क, ख, प, फ से आरम्भ होने वाला पद आने से -

उदा. जनक: करोति। बालक: खादित। देवदत्त: पचित। राम: फलं खादित।

भो: इस अव्यय के बाद कठोर व्यंजन आने से -

उदा. भो: चारुदत्त, कुत्र गच्छिस ? भो: केशव, पाहि माम्।

2. पदान्त के विसर्ग का लोप कब होता है ?

स: या एष: इन पदों के बाद अ के अलावा कोई भी वर्ण आने पर पहले पद के विसर्ग का लोप होता है -

उदा. स मनुष्य:। स बाल:। स आगच्छति। एष उपविशति।

पदान्त में अ: और अगले पद के आरम्भ में अ के अलावा कोई भी स्वर आने पर पहले पद के विसर्ग का लोप होता है -

उदा. नृप इच्छति। पुत्र आगच्छति।

पदान्त में आ: और अगले पद के आरम्भ में स्वर अथवा मृद् व्यंजन होने पर पहले पद के विसर्ग का लोप होता है -

उदा. बाला धावन्ति । खगा उड्डयन्ते । मनुष्या इच्छन्ति ।

भो: अव्यय के आगे कोई भी स्वर / मृद् व्यंजन आने पर भो: के विसर्ग का लोप होता है -

उदा. भो भो: पान्था: । भो भो जना: ।

भो भो: सेवका:।